ISSN: 3048-9423(Online)
Naveen International Journal of Multidisciplinary Sciences (NIJMS)
© NIJMS | Vol. 1 | Issue 4 | Feb-Mar 2025
Available online at: https://nijms.com/

भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षक की भूमिका

कृष्ण कुमार यादव[1] एवं प्रोफे नीति[2]

[1]शोध छात्र, शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग, चौधरी चरण सिंह डिग्री कालेज, हेवरा, इटावा

[2]प्रोफेसर, शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग, चौधरी चरण सिंह डिग्री कालेज, हेवरा, इटावा

[1]*corresponding author Emai: kkygbcd@gmail.com*

[2]*Email: neetiy71@gmail.com*

शोध सारांश

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षक (गुरु) की भूमिका केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह एक व्यापक और बहुआयामी दायित्व था जो शिष्य के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास को समाहित करता था। वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक, गुरु-शिष्य परंपरा भारतीय शिक्षा व्यवस्था की आधारशिला रही है। यह शोध भारतीय दर्शन, धर्म, और सामाजिक व्यवस्था के संदर्भ में शिक्षक की बहुमुखी भूमिका का विश्लेषण करता है। वैदिक साहित्य में गुरु को 'गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु देवो महेश्वरः' कहकर परम पूजनीय माना गया है। उपनिषदों में गुरु को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला बताया गया है। गुरुकुल प्रणाली में शिक्षक न केवल विषय विशेषज्ञ था, बल्कि आध्यात्मिक मार्गदर्शक, चरित्र निर्माता, और जीवन शैली का प्रेरणास्रोत भी था। भारतीय परंपरा में शिक्षक की प्रमुख भूमिकाएं हैं: ज्ञान प्रदाता, चरित्र निर्माता, आध्यात्मिक गुरु, सामाजिक सुधारक, और सांस्कृतिक संरक्षक। गुरु-शिष्य संबंध में पारस्परिक श्रद्धा, विश्वास, और आजीवन निष्ठा के सिद्धांत निहित हैं। यह परंपरा व्यक्तिगत शिक्षा, मौखिक परंपरा, और अनुभवजन्य ज्ञान पर आधारित थी। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में भी इन मूल्यों की प्रासंगिकता निर्विवाद है। समकालीन शिक्षा नीतियों में गुरु-शिष्य परंपरा के तत्वों को अपनाने की आवश्यकता है ताकि शिक्षा केवल सूचना स्थानांतरण न रहकर व्यक्तित्व विकास का माध्यम बने।

बीज शब्द: गुरु-शिष्य परंपरा, शिक्षक की भूमिका, गुरुकुल प्रणाली, भारतीय ज्ञान परंपरा, गुरुकुल प्रणाली।

परिचय-

भारतीय सभ्यता और संस्कृति में शिक्षक का स्थान सदैव पूज्यनीय और सम्मानजनक रहा है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक, शिक्षक को केवल ज्ञान का प्रसारक नहीं, बल्कि मानव व्यक्तित्व के निर्माणकर्ता, संस्कारों के संवाहक और समाज के मार्गदर्शक के रूप में देखा गया है। भारतीय दर्शन में "गुरु" शब्द का अत्यधिक गहरा अर्थ है - "गु" का अर्थ अंधकार और "रु" का अर्थ प्रकाश है, अर्थात् गुरु वह है जो अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षक की भूमिका का अध्ययन

करना आज के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमें न केवल अपनी समृद्ध शैक्षणिक विरासत को समझने में सहायता करता है, बल्कि समकालीन शिक्षा व्यवस्था में सुधार की दिशा भी प्रदान करता है। वैदिक काल में शिक्षक को "आचार्य" कहा जाता था। आचार्य का अर्थ है वह जो स्वयं आचरण करता है और दूसरों को भी आचरण सिखाता है। इस काल में शिक्षक की भूमिका बहुआयामी थी। वैदिक साहित्य में ऋषियों और मुनियों को महान् शिक्षक के रूप में चित्रित किया गया है। वे न केवल ज्ञान के भंडार थे, बल्कि अपने शिष्यों के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करते थे। तैत्तिरीय उपनिषद् में आचार्य को "ब्रह्मा" की संज्ञा दी गई है, जो शिक्षक की महत्ता को दर्शाता है।

वैदिक काल में शिक्षक की मुख्य जिम्मेदारियाँ थीं: श्रुति परंपरा का संरक्षण, विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का विकास, व्यावहारिक जीवन की शिक्षा, और आध्यात्मिक मार्गदर्शन। शिक्षक अपने शिष्यों के लिए माता-पिता का काम करते थे और उनके संपूर्ण कल्याण की जिम्मेदारी लेते थे।

गुरुकुल प्रणाली में शिक्षक का स्थान-

गुरुकुल प्रणाली भारतीय शिक्षा व्यवस्था की आधारशिला थी। इसमें शिक्षक का स्थान केंद्रीय और अत्यंत महत्वपूर्ण था। गुरुकुल में गुरु केवल शिक्षक नहीं थे, बल्कि एक पिता, मित्र, दार्शनिक, और जीवन मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते थे। गुरुकुल प्रणाली में शिक्षक की विशेषताएं थीं: व्यापक ज्ञान और अनुभव, नैतिक चरित्र की श्रेष्ठता, शिष्यों के प्रति निःस्वार्थ भावना, व्यक्तिगत ध्यान और देखभाल, और जीवनपर्यंत शिक्षा की प्रतिबद्धता। गुरु अपने शिष्यों को न केवल पुस्तकीय ज्ञान देते थे, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में उनका मार्गदर्शन करते थे।

इस प्रणाली में गुरु-शिष्य संबंध अत्यंत पवित्र और गहरा माना जाता था। शिष्य अपने गुरु को भगवान् के समान मानते थे और गुरु अपने शिष्यों को अपनी संतान के समान प्रेम करते थे। यह संबंध केवल शिक्षा काल तक सीमित नहीं था, बल्कि जीवनभर चलता था।

उपनिषदों में शिक्षक की महत्ता

उपनिषद् भारतीय दर्शन के मूलाधार हैं और इनमें शिक्षक की भूमिका को अत्यंत उच्च स्थान दिया गया है। उपनिषदों में गुरु को तत्वज्ञान का प्रतीक माना गया है जो शिष्य को भ्रम से सत्य की ओर ले जाता है। छांदोग्य उपनिषद् में गुरु उद्दालक अपने पुत्र श्वेतकेतु को "तत्वमसि" का उपदेश देते हैं, जो आत्मा और परमात्मा की एकता का महान् सत्य है। कठोपनिषद् में यम और नचिकेता के संवाद में गुरु की भूमिका स्पष्ट होती है, जहां गुरु शिष्य की जिज्ञासा और तत्परता को देखकर ही गहन ज्ञान प्रदान करता है।

उपनिषदों में गुरु की विशेषताएं हैं: श्रोत्रिय और ब्रह्मनिष्ठ होना, शास्त्र ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक अनुभव, शिष्य की योग्यता को परखने की क्षमता, और धैर्य के साथ शिक्षा देने की कला। उपनिषदों में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि बिना गुरु के तत्वज्ञान संभव नहीं है।

बौद्ध और जैन परंपरा में शिक्षक-

बौद्ध परंपरा में गौतम बुद्ध को सर्वोच्च शिक्षक माना गया है। बुद्ध की शिक्षा पद्धति में कई विशेषताएं थीं जो आज भी प्रासंगिक हैं। वे व्यावहारिक समस्याओं से शुरुआत करते थे, तर्कसंगत विचार को प्रोत्साहित करते थे, और शिष्यों को स्वयं अनुभव करने के लिए प्रेरित करते थे। बुद्ध की शिक्षा में व्यक्तिगत मार्गदर्शन का विशेष महत्व था। वे प्रत्येक व्यक्ति की मानसिक स्थिति और क्षमता के अनुसार उपदेश देते थे। उनकी शिक्षा में करुणा, मैत्री, और प्रज्ञा के गुणों का विकास प्रमुख था।

जैन परंपरा में भी गुरु का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। महावीर स्वामी और अन्य तीर्थंकरों को महान् शिक्षक माना गया है। जैन शिक्षा में अहिंसा, सत्य, और अपरिग्रह के सिद्धांतों को व्यावहारिक जीवन में उतारने की शिक्षा दी जाती थी।

मध्यकालीन भारत में शिक्षक की भूमिका-

मध्यकाल में भारतीय शिक्षा व्यवस्था में नए आयाम जुड़े। इस काल में हिंदू और इस्लामी शिक्षा परंपराओं का मेल हुआ। नालंदा, तक्षशिला, और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों में विदेशी छात्र भी पढ़ने आते थे, जो भारतीय शिक्षकों की गुणवत्ता का प्रमाण है। इस काल में आचार्य शंकर, रामानुज, मध्व, और चैतन्य महाप्रभु जैसे महान् शिक्षक हुए जिन्होंने न केवल धर्म और दर्शन की शिक्षा दी, बल्कि सामाजिक सुधार में भी योगदान दिया। इन आचार्यों ने अपने शिष्यों को तर्कसंगत चिंतन, शास्त्र अध्ययन, और व्यावहारिक जीवन में धर्म के पालन की शिक्षा दी।

मध्यकाल में शिक्षकों की विशेषताएं थीं: बहुभाषी ज्ञान, अंतर्धार्मिक संवाद की क्षमता, सामाजिक सुधार की भावना, और व्यापक दृष्टिकोण। इस काल के शिक्षकों ने विभिन्न क्षेत्रों में अपना योगदान दिया और ज्ञान की नई शाखाओं का विकास किया।

आधुनिक काल में परंपरागत शिक्षक की भूमिका-

उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में भारत में पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली का प्रवेश हुआ, लेकिन परंपरागत शिक्षकों ने भी अपनी भूमिका निभाना जारी रखा। महात्मा गांधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, और अरविंद घोष जैसे महान् व्यक्तियों ने भारतीय शिक्षा परंपरा और आधुनिक शिक्षा के बीच सेतु का काम किया। गांधी जी ने नई तालीम के माध्यम से भारतीय शिक्षा में व्यावहारिकता और मानवीय मूल्यों को शामिल किया। उन्होंने शिक्षक को समाज सुधारक की भूमिका में देखा। टैगोर ने शांति निकेतन के माध्यम से गुरुकुल परंपरा को आधुनिक रूप दिया। इस काल में शिक्षकों ने राष्ट्रीय चेतना जगाने, सामाजिक कुरीतियों को दूर करने, और नई पीढ़ी में वैज्ञानिक सोच विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं देते थे, बल्कि व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण पर भी ध्यान देते थे।

भारतीय शिक्षक की विशिष्ट गुणवत्ताएं-

भारतीय परंपरा में शिक्षक की जो विशेषताएं बताई गई हैं, वे आज भी प्रासंगिक हैं। मुण्डकोपनिषद् में कहा गया है कि गुरु श्रोत्रिय और ब्रह्मनिष्ठ होना चाहिए, अर्थात् उसमें शास्त्र ज्ञान के साथ-साथ आध्यात्मिक अनुभव भी होना चाहिए। भारतीय शिक्षक की

मुख्य गुणवत्ताएं हैं: गहन विषय ज्ञान और निरंतर अध्ययन, उच्च नैतिक चरित्र और आदर्श आचरण, शिष्यों के प्रति निःस्वार्थ भाव और करुणा, धैर्य और सहनशीलता, व्यक्तिगत ध्यान देने की क्षमता, जीवन के व्यावहारिक पहलुओं की समझ, और समाज कल्याण की भावना। भारतीय परंपरा में शिक्षक को केवल सूचना देने वाला नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माता माना गया है। वह छात्रों में केवल बौद्धिक विकास नहीं करता, बल्कि उनके भावनात्मक, सामाजिक, और आध्यात्मिक विकास में भी योगदान देता है।

गुरु-शिष्य परंपरा की विशेषताएं-

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में गुरु-शिष्य परंपरा का विशेष महत्व है। यह परंपरा कई विशिष्ट लक्षणों से युक्त है जो इसे अन्य शिक्षा प्रणालियों से अलग करती है। इस परंपरा में पारस्परिक सम्मान और विश्वास का विशेष महत्व है। गुरु अपने शिष्यों को न केवल ज्ञान देते हैं, बल्कि उनके व्यक्तित्व को भी निखारते हैं। शिष्य अपने गुरु के प्रति पूर्ण श्रद्धा और समर्पण रखते हैं।

गुरु-शिष्य परंपरा की विशेषताएं हैं: व्यक्तिगत संबंध और भावनात्मक जुड़ाव, जीवनपर्यंत चलने वाला रिश्ता, नैतिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शन, व्यावहारिक जीवन की शिक्षा, कौशल विकास पर ध्यान, और परंपरा का संरक्षण और विकास। यह परंपरा केवल औपचारिक शिक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में इसका प्रभाव देखा जा सकता है।

समकालीन शिक्षा में भारतीय परंपरा की प्रासंगिकता-

आज के युग में जब शिक्षा व्यवस्था तकनीकी क्रांति के कारण तेजी से बदल रही है, भारतीय शिक्षक परंपरा की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। आधुनिक शिक्षा में जो कमियां दिखाई दे रही हैं, उनका समाधान भारतीय परंपरा में मिल सकता है। भारतीय परंपरा में शिक्षक की होलिस्टिक भूमिका आज की आवश्यकता है। आज के छात्र न केवल तकनीकी ज्ञान चाहते हैं, बल्कि जीवन के मूल्यों और अर्थ की तलाश में भी हैं। भारतीय शिक्षक परंपरा इस आवश्यकता को पूरा कर सकती है। समकालीन शिक्षा में भारतीय परंपरा के उपयोगी तत्व हैं: व्यक्तिगत ध्यान और मार्गदर्शन, मूल्य आधारित शिक्षा, व्यावहारिक ज्ञान पर जोर, शिक्षक का आदर्श चरित्र, शिक्षा में आध्यात्मिक आयाम, और समग्र व्यक्तित्व विकास। ये तत्व आधुनिक शिक्षा को अधिक प्रभावी और अर्थपूर्ण बना सकते हैं।

निष्कर्ष-

भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षक की भूमिका का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि यहाँ शिक्षक को केवल एक पेशेवर नहीं, बल्कि समाज के मार्गदर्शक और मानव निर्माता के रूप में देखा गया है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक, भारतीय शिक्षकों ने न केवल ज्ञान का प्रसार किया है, बल्कि संस्कृति का संरक्षण भी किया है और सामाजिक परिवर्तन में भी योगदान दिया है। भारतीय शिक्षक परंपरा की मुख्य विशेषताएं - गुरु-शिष्य का पवित्र रिश्ता, व्यक्तिगत मार्गदर्शन, मूल्य आधारित शिक्षा, और समग्र व्यक्तित्व विकास - आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी पहले थीं। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में इन तत्वों को शामिल करना आवश्यक है। आज जब दुनिया तकनीकी प्रगति के साथ-साथ मानवीय संकट का भी सामना कर रही है, भारतीय शिक्षक परंपरा एक प्रकाश स्तंभ

का काम कर सकती है। यह परंपरा हमें सिखाती है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि संपूर्ण मानव का निर्माण करना है।

भारतीय शिक्षक परंपरा का अध्ययन और इसके सिद्धांतों का आधुनिक संदर्भ में अनुप्रयोग न केवल हमारी शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बना सकता है, बल्कि एक स्वस्थ और संस्कारित समाज के निर्माण में भी योगदान दे सकता है। आज की आवश्यकता है कि हम अपनी समृद्ध शिक्षक परंपरा को समझें, उसका सम्मान करें, और उसके श्रेष्ठ तत्वों को आधुनिक शिक्षा में शामिल करें। भविष्य में भारतीय शिक्षा व्यवस्था की सफलता इस बात में निहित है कि हम कितनी अच्छी तरह से अपनी परंपरागत शिक्षक भूमिका को आधुनिक आवश्यकताओं के साथ तालमेल बिठा सकते हैं। यह संश्लेषण न केवल भारत के लिए, बल्कि पूरे विश्व के लिए एक अमूल्य योगदान हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] Agarwal, P. (2018). Role of teacher in gurukula tradition: A comparative study. *Journal of Educational Research*, 45(3), 234-251.
[2] All India Philosophy Conference. (2019). *Proceedings of the 84th session*. Indian Philosophical Congress.
[3] Aurobindo, S. (1956). *The aims of education*. In *Complete works of Sri Aurobindo* (Vol. 17). Sri Aurobindo Ashram.
[4] Indira Gandhi National Open University. (2021). *Open educational resources on ancient Indian education*. http://www.ignou.ac.in/
[5] Joshi, M. (2019). Integration of ancient values in modern education system [Doctoral dissertation, Jawaharlal Nehru University]. Shodhganga Repository.
[6] Mitra, S. K. (1961). *The educational ideas of Tagore*. Orient Longmans.
[7] Naik, J. P. (1975). *Elementary education in India: A promise to keep*. Allied Publishers.
[8] National Conference on Teacher Education. (2020). *Reimagining teacher education in 21st century* [Conference proceedings]. Jamia Millia Islamia.
[9] National Council of Educational Research and Training. (n.d.). *Digital library*. http://www.ncert.nic.in/exemplar/exemplar.html
[10] Patel, R. (2020). Guru-shishya parampara in contemporary educational context. *Indian Journal of Traditional Knowledge*, 19(2), 312-325.
[11] Rashtriya Sanskrit Vidyapeetha. (2021). *Research publications in traditional knowledge systems*. Rashtriya Sanskrit Vidyapeetha Press.
[12] Singh, A. K. (2021). Ancient Indian educational philosophy and its relevance today. *Educational Philosophy and Theory*, 53(8), 823-835. https://doi.org/10.1080/00131857.2020.1788543
[13] Vivekananda, S. (1963). *Education*. In *Complete works of Swami Vivekananda* (Vol. 4). Advaita Ashrama.

Cite this Article:

कृष्ण कुमार यादव एवं प्रोफे नीति, "भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षक की भूमिका", *Naveen International Journal of Multidisciplinary Sciences (NIJMS), ISSN: 3048-9423 (Online), Volume 1, Issue4, pp. 44-48, Feb-Mar 2025.*
Journal URL: https://nijms.com/

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.